

प्रक्रिया  $\rightarrow$  उत्प्रेरण



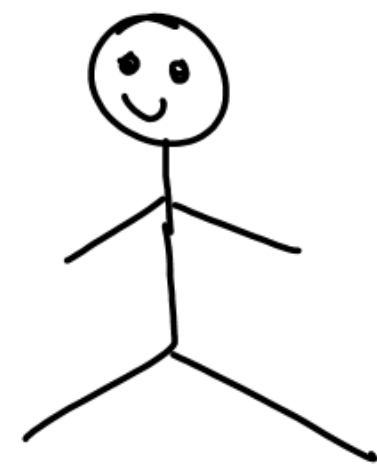
जिलसराँल

(ROR)

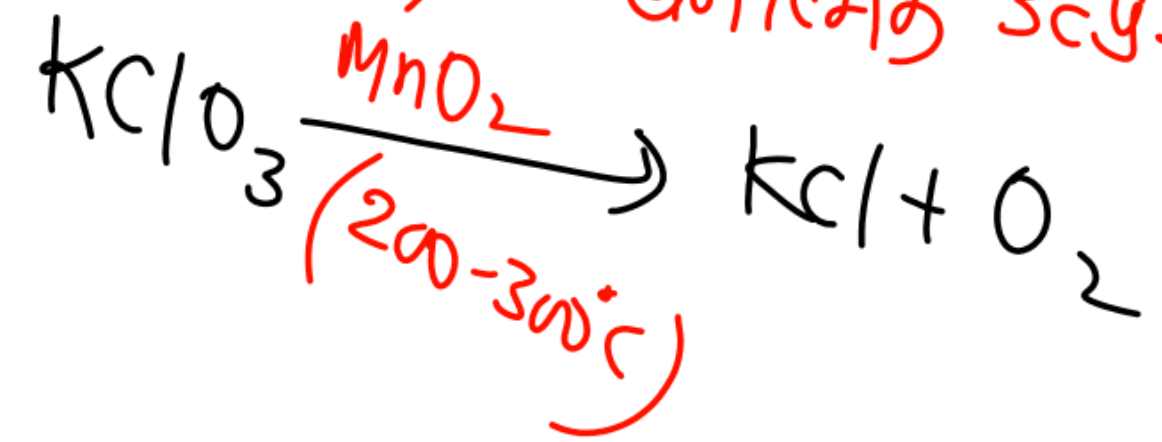
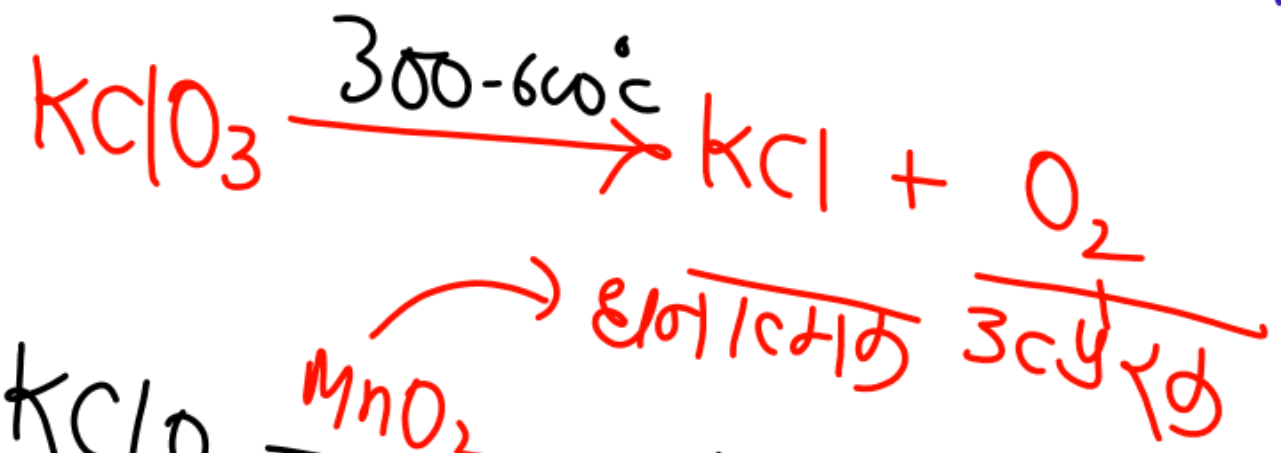
कम

ऋणात्मक उत्प्रेरक

11 no गाड़ी से - 20 मिनट



5 मिनट



अपपादित उत्प्रेरण ✓

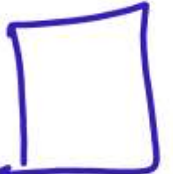

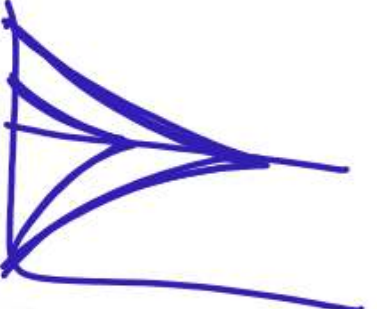
वर्धक

सोडियम आर्सेनाइट + O<sub>2</sub> X

उत्प्रेरक विष

सोडियम सल्फाइट + O<sub>2</sub> ✓

## उत्प्रेरक की विशेषताएँ

1. अभिक्रिया के अंत में उत्प्रेरक अपरिवर्तित रह जाता है। फिर भी, इसमें कुछ भौतिक परिवर्तन हो सकते हैं।
2. उत्प्रेरक की अल्प मात्रा से ही अभिकारकों की पर्याप्त मात्राओं के बीच अभिक्रिया कराई जा सकती है।
3. महीन चूर्ण की अवस्था में उत्प्रेरक अधिक प्रभावकारी होता है।   
4. कोई भी उत्प्रेरक किसी विशिष्ट अभिक्रिया के लिए ही इस्तेमाल होता है,
5. उत्प्रेरक अभिक्रिया को प्रारंभ नहीं करता है, बल्कि यह अभिक्रिया के वेग को बढ़ा देता है।
6. उत्प्रेरक अभिक्रिया की साम्यावस्था में कोई परिवर्तन नहीं लाता, बल्कि यह कम ही समय में साम्यावस्था स्थापित कर देता है।
7. उत्प्रेरक के प्रयोग से अभिक्रिया के पश्चात् बने प्रतिफल की प्रकृति में कोई परिवर्तन नहीं देता है।
8. उत्प्रेरक अभिक्रिया की सक्रियण ऊर्जा को कम कर देता है, किंतु अभिक्रिया की ऊष्मा में कोई परिवर्तन नहीं लाता है।